International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जसपुर, विकासखण्ड (जनपद ऊधमसिंहनगर) के संदर्भ में कुमांऊँ मण्डल (उत्तराखण्ड) की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

डॉ निशा चौहान[1], डॉ मनोज कुमार[2]

[1]सहायक प्राध्यापक भूगोल एस डी पी जी कालेज मुजफ्फरनगर मॉु शाकुम्भरी वि0वि0 सहारनपुर ,उत्तर प्रदेश पिनः 251001
[2]व्याख्याता जीवविज्ञान गर्वनमेंट इ. कालेज कुण्डा यू0एस0नगर पूर्व परामर्शदाता एवं अ0कें0 समन्वयक उ0मु0वि0वि0हल्द्वानी नैनीताल, उत्तराखण्ड पिनः 244713

सार–

अध्ययनगत क्षेत्र , जसपुर विकासखंड , उत्तराखण्ड राज्य (भारत) के कुमाऊँ मण्डल के ऊधम सिंह नगर जिले में स्थित है। भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से यह गांगेय मैदान की जलोढ मिट्टी से बना मैदानी भूभाग है । इस क्षेत्र में ढेला ,लपकना ,फीका बछिया तथा ढूंढा नदियां बहती है। जिसके कारण यहां की मिट्टी में रेत ,सिल्ट, कंकड़ तथा जैविक तत्वों का अनुपात पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इस क्षेत्र का निर्माण भी हिमालय के निर्माण के साथ–साथ हुआ है समय–समय पर विभिन्न भूगर्भ शास्त्रियों ने इसे प्रमाणित किया है। महाभारत और प्राचीन संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विभिन्न संदर्भों से यह जान पड़ता है कि इस क्षेत्र में आदि काल से कॉल किरात ,राजी ,नाग,बौर, थारू, बोक्सा, भूटिया और खस जाति के लोग निवास करते थे। इनमें खस जाति सवसे सशक्त थी । क्षेत्र की शासन व्यवस्था में कत्यूर, चंद्र वंश,गोरखा के बाद अंग्रेजों के शासन का प्रभुत्व रहा है। कत्यूर को आज भी स्थानीय लोग देवता के रूप में मानते हैं तथा इनकी पूजा–अर्चना करते हैं । कत्यूर राजाओं ने यहां बहुत से नाले, मंदिर ,तालाब और हाट बाजारों का निर्माण करवाया था। कत्यूर वंश के पतन के बाद चंद वंश का प्रभुत्त रहा तथा साडे पांच सौ वर्षों तक चंद्र राजाओं ने कुमाऊं पर राज्य किया। इन्होंने अपने शासनकाल में कुमाऊँ में सर्वत्र सुधार और उन्नति के कार्य किए तथा चन्द राजाओं ने अपनी राजधानी चंपावत में स्थापित की। 18 वीं सदी के अंतिम दशक में आपसी दुर्भावनाओं के कारण चंद्र राजाओं की शक्ति क्षीण हो गई। अवसर पाकर गोरखओं ने गोरखा राज्य स्थापना एवं विस्तार किया। गोरखाओं ने अपने शाशनकाल में सैनिक संधि, जमीन प्रबंधन, संगठन तथा कर प्रणाली जैसे सुधारों को किया यह कर्मकांड में विश्वास रखते थे । गोरखाओं के शासनकाल में गुलाम बनाना कुली प्रथा, बेगाार प्रथा तथा अत्याचार बहुत ज्यादा बढ़ गया था। गोरखाओं के शासन के पश्चात यहां अंग्रेजों का शासन आया जिसमें उन्होंने इस क्षेत्र में काफी सुधार और उन्नति के कार्य किए। अध्ययनगत क्षेत्र में विभिन्न राजाओं , शासन व्यवस्था और परंपराओं के कारण यहां की संस्कृति में विविधतायें देखने को मिलती हैं।

प्रमुख शब्द : भौगौलिक , आध्यात्मिक , दृष्टिकोण , भूगर्भ , कॉप मिट्टी

परिचय–

भारत के उत्तरी राज्यों में से एक उत्तराखंड राज्च भौगौलिक, सामरिक, पर्यावरण तथा आध्यात्मिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण राज्य है। वर्तमान उत्तराखंड राज्य के 13 जिलों को दो डिवीजन कुमांऊँ तथा गढवाल विभाजित किया गया है। गंगा दत्त उप्रेती (2010) कुमाऊँ क्षेत्र का विस्तार से बर्णन किया है। कुमायूं क्षेत्र अपनी भौगोलिक सुंदरता ,पर्यावरण,पर्यटन और जैव बिबिधता के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण प्रखण्ड है। भौगोलिक दृष्टिकोण से पूरे कुमायूं क्षेत्र को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है पिथौरागढ़ तथा बागेश्वर जिला उच्च हिमालय , चंपावत, अल्मोड़ा तथा नैनीताल के उच्च क्षेत्र मध्य हिमालय में अवस्थित हैं। पर जबकि नैनीताल के निचला भूभाग तथा ऊधम सिंह नगर जिले के कुछ क्षेत्र तराई भांबर में आते हैं। ऊधमसिंह नगर का कुछ हिस्सा मैदानी भाग में भी आता है। अध्ययनगत क्षेत्र जसपुर विकासखंड ऊधम सिंह नगर जिले में स्थित है भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से यह गांगेय मैदान की जलोढ मिट्टी से बना मैदानी भूभाग है (काजी अहमदए 1942 , ओ0एच0के0स्पेट, 1951) । इस क्षेत्र में ढेला ,लपकना ,फीका बछिया तथा ढूंढा नदियां बहती है जिनके द्वारा बहाकर लाई गयी मिट्टी में रेत ,सिल्ट, कंकड़ , बालू तथा जैविक तत्वों का अनुपात पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। जो यहां की भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। इस क्षेत्र का निर्माण भी हिमालय के निर्माण के साथ–साथ हुआ है समय–समय पर विभिन्न भूगर्भ शास्त्रियों ने इसे प्रमाणित किया है। खस जैसी मूल जातियों के प्रभाव के पश्चात यहॉ की शासन व्यवस्था में निरन्तर बदलाब हुए हैं जिसके कारण यहां बिभिन्न प्रकार के विकास कार्यों को नई दिशा मिली तथा विभिन्न मन्दिरों का निर्माण हुआ। जो आज भी यहां की सांस्कृतिक धरोहर हैं।

क. भूगर्भिक पृष्ठभूमि एवं विस्तार –

कुमाऊँ क्षेत्र वर्तमान में उत्तराखण्ड प्रदेश की कमिश्नरी है जो छः जिलों अल्मोडा,नैनीताल, पिथौरागढ,चम्पावत, बागेश्वर तथा ऊधमसिंह नगर से मिलकर बनी है। इसका कुल क्षेत्रफल 21035 वर्ग किलोमीटर है। इसका अक्षांषीय विस्तार 28^0 43′ उत्तर से 30^0 49′ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $78^0$44′ पूर्व से 81^0 4′ पूर्व में स्थित है। इसका अधिकतर उत्तरी भूभाग हिमाच्छादित पर्वतमालाओं,सघन वनों से आच्छादित है वहीं दक्षिणी भाग तराई भाबर है। 2011 की जनगणना के अनुसार कुमाऊँ की जनसंख्या 42,30,570 तथा लिंगाानुपात 1014.8 यह उत्राखण्ड की कुल जसंख्या का 45.39 प्रतिशत (तालिका–01) है। अध्ययनगत क्षेत्र विकासखंड जसपुर गांग्गेय मैदान का एक अविभाज्य भू–भाग है, जो ऊधमसिंहनगर जनपद के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित है। अध्ययनगत क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 29^0 8′ उत्तर से 29^0 22′उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $78^0$15′ पूर्व से 78^0 52′ पूर्व स्थित है जसपुर विकासखंड का उत्तर दक्षिण विस्तार 15 किलोमीटर तथा पूर्व पश्चिमी अधिक अधिकतम विस्तार 25 किलोमीटर है। विकासखंड जसपुर का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 232 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्र के उत्तर में नैनीताल जनपद पूर्व में तहसील काशीपुर दक्षिण में जनपद मुरादाबाद तथा पश्चिम में जनपद बिजनौर स्थित है। क्षेत्र में 04 न्याय पंचायतें तथा 106 गांव हैं इसमें से आवाद गांव की संख्या 101 है फीका, ढेला,लपकना क्षेत्र की प्रमुख नदियां हैं जो कि क्षेत्र में उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर बहती है।

तालिका : 01

कुमाऊं मंडल की सामाजिक जनसांख्यिकीय रूपरेखा (जनगणना 2011)			
जिला	कुल जनसंख्या	संख्या प्रतिशत में	लिंगानुपात
अल्मोडा	621927	6.15	1142
नैनीताल	955128	9.44	933
पिथौरागढ	485993	4.8	1021
चम्पावत	259315	2.56	981
बागेश्वर	259840	6.15	1093
ऊधसिंहनगर	1648367	16.29	919
योग/औसत	42,30,570	45.39	1014.8

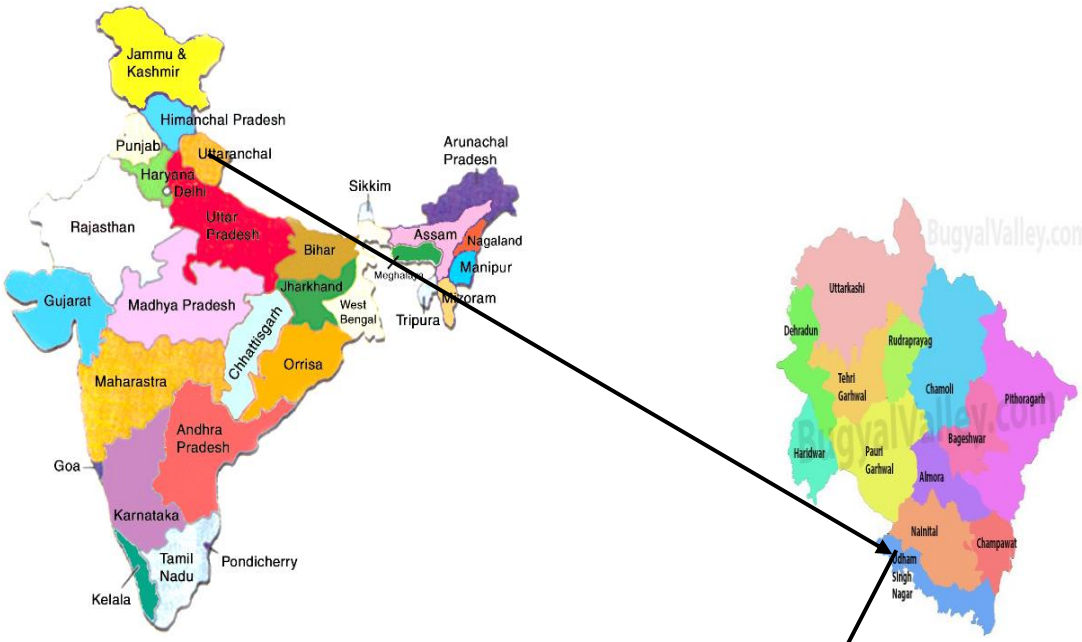

Location Map of the study site in Uttarakhand (India) Uttarakhand

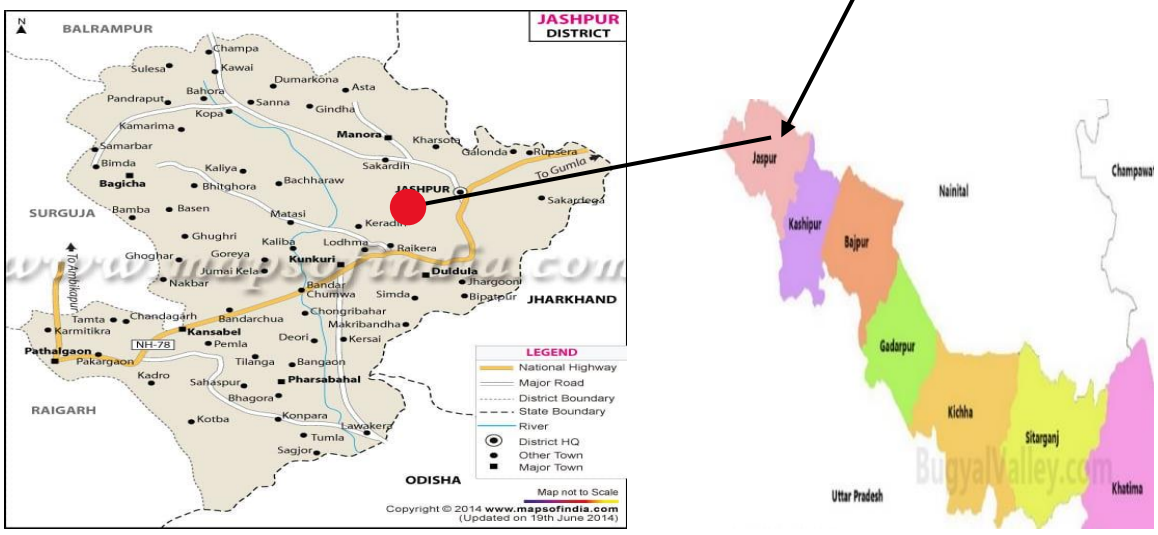

Red colour circle indicate the location of the study Block in district UdhamsinghNagar (Sourse:google.image.com)

ख. भूगर्भिक संरचना–

अध्ययन क्षेत्र जसपुर भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से गांगेय मैदान की जलोढ़ मिट्टी से बना एक मैदानी भू–भाग है। जो कि इस क्षेत्र में वहने वाली फीका, ठेला, लपकना आदि नदियों के निक्षेपों से निर्मित है। इन नूतन निक्षेपों में रेत, सिल्ट, चीका, कंकड, बालू और जैविक तत्वों विभिन्न अनुपात में मिलते हैं। जलोढ़ नदीय एवं भूपृष्ठीय निक्षेपों की एक सतत् एवं समृद्ध शाली श्रंखला है। जो मुख्यतः चीका, रेत, बजरी और उसके अनुपात के मिश्रण के असंधठित परत से निर्मित है।

जसपुर विकासखंड का उत्तरी भाग नैनीताल जनपद की सीमा रेखा पर स्थित है। जो कि तराई क्षेत्र में आता है। यहॉ की मिट्टी में मोटे कणों के ऊपर बारीक कणों वाली मिट्टी की प्रधानता है।अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी भाग में नदी तलहटी में 3 मीटर या इससे कम गहराई का गोलांश की उपस्थिति यह इंगित करती है कि प्रारंभ में हिमालय का अवसाद वर्तमान की तरह उस क्षेत्र से अधिक दूर नहीं था। इस क्षेत्र में चट्टानें श्रंखला में पाई जाती हैं। यह मैदान हल्के रंग की नूतन कॉप मिट्टी के निक्षेप से बना है। काप मिट्टी की गहराई में समुद्री निक्षेप दिखाई पड़ते हैं। सकल क्षेत्र में अवसादी शैल विस्तार हैं यह मैदान विलक्षण रूप से संभागी है। धरातलीय दृष्टि

से यह दृष्टव्य है कि नदियों के किनारे अवनालिका अपरदन द्वारा ऊबड़– खाबड़ धरातल खड्ड और कगार निर्मित हो गए हैं। पुरातन जलोढ़ अथवा बांगर क्षेत्र का रंग अपेक्षाकृत गहरा है, और इस क्षेत्र में अशुद्ध कैलशियम कार्बोनेट जैसे कंकड़ भी कहा जाता है तथा इसकी की बहुलता है। डे के अनुसार पुरातन जलोढ़ अधिकांशतः स्थूल चीका की बनी है और रंग में लाल भूरी से लेकर पीलापन लिए हुए है। बांगर क्षेत्र जलोढ़ मैदान के ऊपर उत्थित वेदिका की रचना करते हैं। इसका रंग हल्का है और इसमें चुना तत्वों की कमी है। शुष्क क्षेत्र में जलोढ के समय नमकीन लोनी का मिश्रण मिलता है। जिसे रेह या कल्लर कहते हैं। इस मैदान का संबंध हिमालय पर्वत श्रंखला से दिखाई पड़ता है और वृहद घाटी तथा गुरूत्व भार के कारण धसकती तलहटी में कई हजार फीट मोटी निक्षेप की व्याख्या करता है। इस मैदान की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में काफी मतांतर है। किंतु यह मतभेद केंद्र पर नहीं बल्कि परिधि पर हैं क्योंकि इतना तो सभी विद्वान कहते हैं कि इस मैदान की उत्पत्ति किसी गर्त में मलबे के निक्षेप से हुई है। गर्त की उत्पत्ति के विषय में विवाद है। मेहंदी रत्ता जी ने लिखा है कि यह क्षेत्र आंतरिक रुप से जलोढ निर्मित भूमि की वृद्धि वाला मैदान है। यह माना जाता है कि हिमालय के सामने एक गहरी व बड़ी अनुदैर्घ्यात्मक गर्त थी। जिससे हिमालय से उद्भूव नदियों ने अपने साथ लाए अवसाद को निक्षेप किया है और इस प्रकार एक वृहद मैदान का निर्माण हुआ।

कर्नल सर सिडनी बुराई के अनुसार हिमालय की उत्पत्ति के समय उत्पन्न हुए दबाव से प्रायद्वीपीय भारत के अंतर में दो सामान्य भ्रंश पढ़ने से एक दरार घाटी बनने से फलस्वरुप विशाल गर्त का निर्माण हुआ, जिसे नदियों ने अवसाद से भर दिया जिससे वृहद मैदान का निर्माण हुआ। आस्ट्रीयन भूगर्भ शास्त्री एडवर्ड स्वेस के अनुसार दक्षिणी पठार एवं बाह्य हिमालय के मध्य विशाल गर्त थी जो अमिनति के रूप में थी किंतु असमान धरातल के कारण यह सममिनति (सिन्क्लोनोरियम) के रूप में परिवर्तित हो गई थी । हिमालय से निकलने वाली नदियों ने वृहद अवसादन करके इसे वर्तमान मैदान का स्वरूप प्रदान किया । ब्लेन फोर्ड के अनुसार इयोसीन युग में भारतीय प्रांयद्वीप अफ्रीका महाद्वीप से मिलता था। उस समय एक सागर पूर्व में असम घाटी से इरावती नदी तक और दूसरा सागर पश्चिम में ईरान एवं बलूचिस्तान से लद्दाख तक विस्तृत था। मशीनी युग के अंतिम चरण में इसका विस्तार पंजाब तक हो गया मायोसीन युग के प्रारंभ में हिमालय श्रेणीयां ऊपर उठने लगी जिससे सागर धीरे–धीरे समाप्त होने लगा और सागर के निवर्तन से इस मैदान का आविर्भाव हुआ।

हिमालय के निर्माण के पश्चात प्रायद्वीप के उत्तर एवं बाह्य हिमालय के दक्षिण में एक खड्ड की उत्पत्ति हो गई अथवा हिमालय के उद्भव के उपरांत टेथिस सागर का अवशिष्ट भाग एक विशाल खंड के रूप में अब शेष रह गया जिसका संबंध पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर से था। हिमालय से निकलने बाली बहुत सी नदियों के निक्षेपण और अवसाद के दबाव के कारण कॉप की मोटाई में वृद्धि हो गई। खड्ड की धरातलीय सतह ऊपर उठ गई और पीछे की ओर खिसक गए जिसके कारण इस मैदान की उत्पत्ति हुई ।

डॉक्टर कृष्णन् के अनुसार इस मैदान में पाए जाने वाले पुरातन एवं अभिनव निक्षेप की मोटाई 1000 मीटर तक है। टरशियरी युग में इस मैदान का अधिकांश भाग समुद्र के अंतर्गत था। गंगा बेसिन के चुंबकीय सर्वेक्षण से पता चलता है कि सतह और आधार शैलों के बीच साधनों की मोटाई लगभग 7000 मीटर है। कृत्रिम परिवेधों से यह मोटाई 100 से 400 मीटर के मध्य पाई गई है। आरडी ओल्डहम ने अपने अध्ययन के आधार पर जलोढ़ की गहराई 4000 से 6000 मीटर के बीच परिकलित की है। ई0ए0 ग्लिनी ने इसकी मोटाई लगभग 2000 मीटर अनुमानित की है। डॉक्टर हेडस्ट्रियन के अनुसार इस भूगर्भिक क्रम में तराई पेटी गहरी गर्त में थी जो सर्वप्रथम लहरों द्वारा भरी गई। डॉ हरबर्ट भी पर्वत और मैदान के बिस्तार तराई पेटी की स्थिति स्वीकार करते हैं। लंबे आयुष्चक्र की अवधि में इस क्षेत्र का भौतिक इतिहास क्या था इसकी जानकारी का हमारे पास कोई साधन नहीं है। इस प्रकार भूगर्भिक रचना की दृष्टि से इसे तीन भागों में बांटा जा सकता है।

क– बांगर प्रदेश जिसका निर्माण मध्य से लेकर ऊपरी प्लास्टोसीन युग (10लाख वर्ष पूर्व) में हुआ
ख– तराई प्रदेश जिसका निर्माण ऊपरी प्लास्टोसीन से आधुनिक 10लाख से 25000 वर्ष पूर्व) में हुआ।
ग –खादर प्रदेश जिसका निर्माण अभिनव युग में हुआ।
अध्ययनगत क्षेत्र का क्षैतिजिय विभाजन के आधार पर चार भगो में बांटा जा सकता है।

1. भांवर प्रदेश
2. तराई प्रदेश
3. उच्च भू–भाग अथवा बांगर प्रदेश
4. कछार प्रदेश

भांवर का निर्माण हिमालय से निकलने वाली नदियों के अवसाद के छोडने के कारण हुआ है। भांवर प्रदेश का लुप्त जल धरातल के ऊपर इधर उधर बहता है इसके कारण दलदल जैसी स्थिति बन जाती है। जिसमें महीन अवसादी कणों के साथ साथ पत्थर ,रेत ,चिकनी मिट्टी,कंकड आदि पायें जाते हैं जो तराई प्रदेश का निर्माण करते हैं। अध्ययनगत क्षेत्र के वह भू–भाग जहॉ बाढ का पानी नहीं पहूँच पाता है, उच्च भू–भाग अथवा बांगर प्रदेश कहलाता है। यह पुराने कॉप से निर्मित मैदान है। यह सबसे अधिक घनी आबादी वाले

क्षेत्र हैं। जसपूर विकासखण्ड के पश्चिम की ओर रामगंगा का कछार पूर्व की ओर काली का कछार मैदान स्थित है यहॉ प्रतिबर्ष नदियों की बाढ का जल पहुॅचता है।

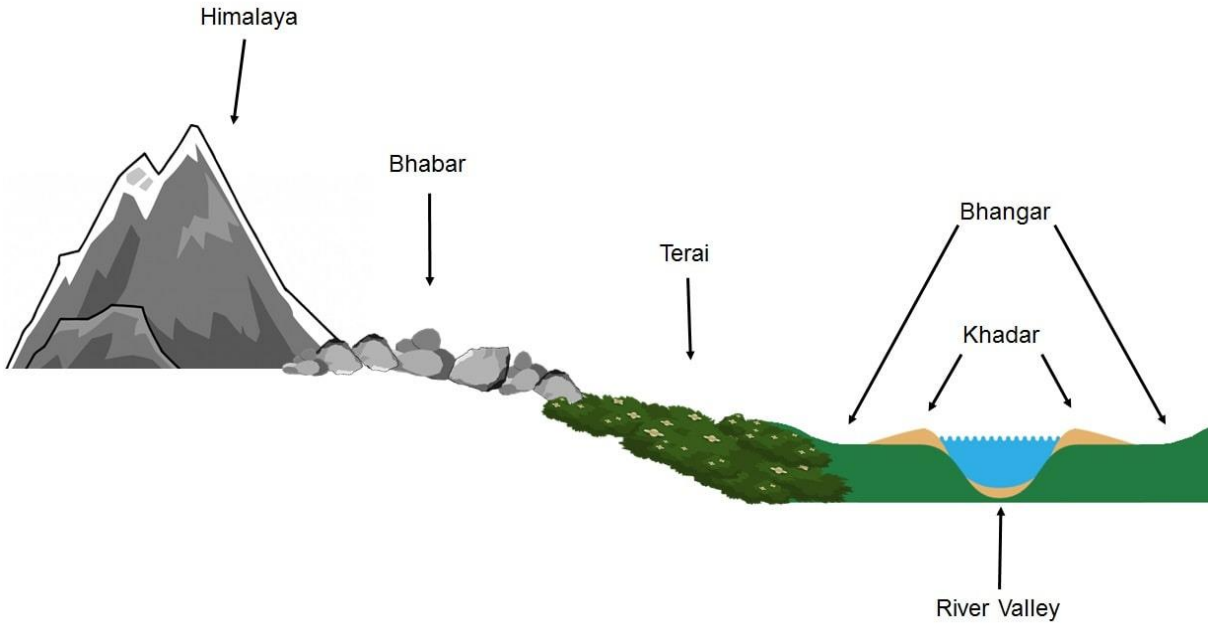

क्षैतिजिय विभाजन के आधार पर बिभिन्न क्षेत्रों निर्माण का आरेखीय निरूपण

ग. एतिहासिक (राजनैतिक पृष्ठभूमि)

कुमाऊॅ शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मत प्रचलित रहे हैं। भाषिक दृष्टि से यही उचित जान पड़ता है कि इस शब्द की उत्पत्ति मूलतः संस्कृत के कूर्म शब्द से हुई है । चंपावत के समीप 2196 मीटर ऊंचा कांतेश्वर नामक पर्वत है। जिस के संबंध में मान्यता है कि विष्णु का द्वितीय अवतार (कूर्मावतार) उस पर 3 वर्ष तक रहा। तब से उस पर्वत को कांतेश्वर के स्थान पर कूर्मांचल नाम से जाना जाने लगा इस पर्वत की आकृति भी कच्छप की पीठ जैसी जान पड़ती है। सम्भवतः इसी कारण इस क्षेत्र का नाम कूर्मांचल पड़ा होगा। पहले शायद कूर्म शब्द का प्रयोग में आता होगा क्योंकि पूर्व शब्द का प्रयोग स्थानीय भाषा में बहुतायत से मिलता है। कूर्म के स्थान पर कुर्मू शब्द प्रचिलित होने का कारण यह भी हो सकता है कि यहां की वोलियों में उकारांत अधिक पाई जाती है।कालांतर में साहित्यक ग्रंथों तथा ताम्रपत्रों में कूर्म के स्थान पर कुमाऊॅ और इसके स्थान पर कुमांयूॅ शब्द स्वीकृत हुआ संस्कृत ग्रंथों में कूर्माचंल शब्द का प्रयोग मिलता है।

घ. पौराणिक काल

प्रमाणिक ऐतिहासिक तथ्यों के अभाव में निश्चित रूप से कहना कठिन है कि मूलतः कुमाऊॅ क्षेत्र में किन–किन मानव जातियों का प्रभुत्त था। महाभारत , पुराण और प्राचीन संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विभिन्न संदर्भों से जान पड़ता है कि यहां किरात , किन्नर, यद्वा, तंगव , कुलिंग ,खस इत्यादि जातियां निवास करती थीं ।महाभारत के वनपर्व में मध्य हिमालय की उपत्यकाओं में निवास करने वाली जातियों को किरात, तंगव तथा कुलिंग बताया गया है।

किरांततंगणाकीर्ण कुलिंग शत् संकुलम्– (महाभारत वनपर्व अ. 140)। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थितों के नाम गिनाते हुए दुर्योधन कहता है कि मेरू मंदिर पर्वतों के मध्य शैलोक्ष नदी के किनारे निवास करने वाले खस–एकासन, पारद, तंगव और परतगण नामक पर्वतीय राजा काले रंग का चंदर और पिपीलिका जाति का स्वर्ण लाये थे । (महाभारत अध्याय वनपर्व अध्याय 52) द्रोणपर्व में वर्णित है कि उक्त पर्वतीय जातियों ने पत्थर के हथियारों से महाभारत की लड़ाई में दुर्योधन की ओर से भाग देकर कृष्ण के सारथी सात्यकि पर चारों ओर से पथराव किया था किंतु सात्यकि के नाराचों के समक्ष वे टिक न सके। (महाभारत द्रोणपर्व अध्याय 141 / 42–43)। ब्रह्मपुराण और वायु पुराण के उल्लेखों से मध्य हिमालय के किरात, किन्नर, यक्ष, गंधर्व, विद्याधर, नाग जातियों के अस्तित्व के संकेत मिलते हैं । स्कंदपुराण के मानस खंड में कासी (कौशिकी) स्थित कायापर्वत नाम से वर्णित गिरिमाला को अल्मोड़े का पहाड़ी भ–ूभाग माना जाता है ।

कौशिकी शाल्मली मध्ये पुण्यः काषाय पर्वतः !
तस्ये पश्चिम भागे वे क्षेत्र विष्णो प्रतिष्ठितम् ।।

अल्मोड़ा में जाखन देवी के मंदिर का अस्तित्व आज भी इस मध्य की याद दिलाता है ,कि अत्यंत प्राचीन काल से यहां दक्षों का आवास रहा है कालिदास मेघदूत का यज्ञ मेघ की अल्कापुरी की पहचान के चिन्ह बताते हुए कहता है कि उसकी प्रिया ने अपने दरवाजे की देहली पर शंख पदम की अल्पनाओं के ऊपर पुष्प बिखेरे होंगे "**द्वारापान्ते लिखित वपुपों शंखपदमौ च दृष्टवा**" (मेघदूत 200) विन्यसन्ति भूविगणनया देहलीदन्त पुष्पैः(उ मेघदूत 80) सांस्कुतिकजीवन के विभिनन पक्षों में परिपाटी कुमाऊँ में विभिन्न त्योंहारों के अवसरों पर आज भी विद्यमान है।

यक्ष जाति के अलावा आदि युग में कुमाऊँ में नाग जाति के आवास के संकेत भी मिलते हैं। पिथौरागण जिले के बेरीनाग नामक स्थान में वीनाग/वेनीनाग का प्रसिद्ध मंदिर है। नागों के नाम पर कुमाऊँ में और भी कई मंदिर हैं जैसे घौल नाग, कालीनाग, पिंगलनाग, खरहीनाग, वासुकी नाग, नागदेय आदि।

कुमाऊँ की आदिम जातियों में यक्ष और नाग जाति की अस्तित्व की कल्पना अनुमानों पर आधारित है। किंतु किरात जाति के संबंध में कुछ ठोस प्रमाण उपलब्ध होते हैं। समाजशास्त्रीय और नृवैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रागैतिहासिक काल में कुमाऊं –गढ़वाल के भूभाग में किरात , मंगोल आदि आर्येतर जातियों के निवास क्षेत्र रहे हैं , जिन्हें कालांतर में उत्तर पश्चिम की ओर से आने वाली अवैदिक खस आर्यों ने विजित कर लिया । यह भी संभावना है कि इस प्रदेश के आग्नेय परिवार की मुंडा भाषा–भाषी किरात जाति का प्रभुत्व दीर्घकाल तक रहा अन्यथा प्राचीन काल में इसे किरातमंडल की संज्ञा न मिलती। अपने स्वतंत्र भाषाई अस्तित्व के साथ किरातों के वंशज आज भी कुमाऊँ के अस्कोट और डीडीहाट नामक स्थान पर मौजूद हैं। कुमाऊँ की बोलियों में आज भी अनेक ऐसे शब्द प्रचलित हैं ,जो प्रागैतिहासिक किरातों की बोली के अवशेष प्रतीत होते हैं जैसे ठुड़ (लिंग), लिडुण (लिंगाकार कुंडली मुखी जलीय पौधा), जुड़ (मूँध), झुडर (अनाज का एक प्रकार) हाड् (शाखा), ठाडर् (बेलयुक्त पौधों का सहारा देने के लिए लगाया जाने वाला वृक्ष की सूखी शाखा), गाड् (नदी), ल्यत (बहुत बहुत गीली मिट्टी) आदि शब्दावली के अतिरिक्त कतिपय व्याकरणिक तत्व भी आग्नेय परिवार के भाषाओं से समानता रखते हैं। जैसे कुमाऊँनी कर्म कारक सूचक कणि/कन प्रत्यय मुंडा की भोबेसी तथा कोर्क वालियों में के /किन या खे/खिन है। 20 के समूह के आधार पर गिनने की पद्धति राजी यहॉ समान रूप से प्रचिलित है। बीस के समूह को कुमाऊँनी में बिसि शब्द प्रचिलित है।

किरात जाति के अलावा कुमाऊं क्षेत्र में हिमालय के उत्तरांचल में निवास करने वाली भोटिया का भी प्रभुत्त रहा। दीर्घ काल तक कुमाऊँ प्रदेश और भोट प्रदेश में पारस्परिक व्यापारिक संबंध भी रहे हैं। मोरिया शब्द मूलतः वोट या भी है। तिब्बत को भोट देश या भूटान भी कहा जाता है। भूटान से संबन्धित होने के कारण यहां के निवासियों को भूटिया कहा गया । भूटियों की भाषा तिब्बती कही गयी। भोटियों की भाषा तिब्बती के निकट है। जोहार, दारमा, व्यास तथा चौदांस की भाषा में स्थान विभेद पाए जाते हैं । भोटियों की बोली जोहारी पर कुमाऊँनी भाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस आधार पर यह संकल्पना की जा सकती है कि आर्यों के आगमन से पहले यहॉ मुंडा तथा तिब्बती परिवार की भाषा का व्यापार करने वाले लोग निवास करते रहे होंगे।

कुमाऊँ में शक संवत् के प्रचलन एवं अल्मोड़ा में कोसी के समीप विद्यमान कटारमल नामक सूर्य मंदिर के अस्तित्व से इस संभावना की पुष्टि होती है कि किरात्, राजी, नाग इत्यादि आदिम जातियों के पश्चात यहॉ शक जाति का अस्तित्व रहा है। गणनाथ, जागनाथ, भोलानाथ आदि लोक देवताओं के मंदिरों आदि स्थानों के नामों के आधार पर यहां नाथ जाति के अस्तित्व की भी संभावना व्यक्त की जा सकती है।

इतना निर्विवाद है कि कुमाऊँ के आदि निवासी कोल, किरात, राजी नाग, हूण, शक वौर, थारू, बोकसा भोटिया और खस जाति के लोग हैं । इनमें से सबसे सशक्त जाति खस थी जो अन्य जातियों के बाद कुमाऊँ में आई यहां की भाषा और संस्कृति के आधार पर भूमि के निर्माण में खसों का भी योगदान रहा है।

मूलतः आर्य जाति से संबंधित होते हुए भी खस ऋग्वेद के निर्माण से पूर्व अपने मूल आर्य भाइयों से अलग होकर पृथक –पृथक दलों में मध्य एशिया से पूर्व दिशा की ओर चले एवं बसे होंगे। यही कारण है कि वह अवैदिक आर्य भी कहलाते है। अनुमान है कि वह ईशा पूर्व द्वितीय सहस्त्राब्दि के लगभग पश्चिम से पूर्व की ओर दुर्गम पर्वतों को लांघते हुए भारत के विभिन्न भागों में फैल गये। कुमाऊँ में खसों के प्रवेश के संबंध में निश्चित समय संकेत करना दुष्कर कार्य है फिर भी इतना निश्चित है कि यहां राजपूतों के आगमन से पूर्व खसों का प्रभुत्व था।

(ड.) शासन व्यवस्था

1. कत्यूरी शासन

कुमाऊं में सबसे पहले कत्यूरी राजवंश के राजाओं ने शासन की बागडोर संभाली राहुलसंस्कृतायन ने इस समय को सन् 850 से 1060 ई0 तक माना है। कत्यूरी शासकों की राजधानी पहले जोशीमठ थी परंतु बाद में कार्तिकेयपुर (बैजनाथ, बागेश्वर) को अपनी राजधानी बनाया यद्यपि इस विषय में भी विद्वानों , इतिहासकारों में मतभेद है। कत्यूर राजाओं का राज्य चमोली के पश्चिम में सतलुज नदी के तट से लेकर दक्षिण के मैदान तक फैला था। पूरब में भारत तिब्बत सीमा के कुछ गॉव तथा वर्तमान काशीपुर ,पीलीभीत और

सम्पूर्ण रूहेलखण्ड इनके शासन के अन्तर्गत आते थे। कुमाऊँ के निवासी कत्यूरों को लोक देवता मानते हैं तथा इनकी पूजा अर्चना करते हैं। यह पूजा अर्चना के कार्य इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि कत्यूर शासकों का प्रभाव जनता पर बहुत पड़ा। साथ ही उन्होंने जनता के हित में बहुत से कार्य किये इनके शासनकाल में बहुत से मंदिर, नाले , तालाब तथा हाट बाजार का निर्माण हुआ। पाली पहाड़ में ईडा में बारह खम्बा है जिसमें इन राजाओं की यशोगाथा अंकित है तत्कालीन शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों द्वारा यह भी पता चलता है कि कत्यूर राजा वैभवशाली होने के साथ–साथ प्रजा के हितैषी भी थे। इनका शासन काल कुमाऊँ में डोरी, असकोट, वारामंडल, द्वाराहाट, लखनपुर में फैला हुआ था। 11 वीं शताब्दी के बाद इनकी शक्ति घटने लगी। राजा धामदेव व ब्रह्मदेव के बाद से कत्यूरी शासन समाप्त होने लगा था । डॉक्टर त्रिलोचन पाण्डे ने भी लिखा है कत्यूर चंद शासकों का उल्लेख मुख्यतः लोक गाथाओं में हुआ है। प्रसिद्ध लोकगाथा राजुला–मालूसाई का संबंध कत्यूरों से है। कत्यूरी राजाओं की संतान अस्कोट, डोटी, पाली पछाऊं में अभी भी विद्यमान है। कुमाऊँ में आज भी प्रचलित है कि कत्यूर वंश के अवसान का सूर्यछिप गया और रात्रि हो गई किंतु चंदवंशी चंद्रमा के उदय से अंधकार मिट गया।

बैजनाथ (कार्तिकेपुतम) कत्यूर शासनकाल

बैजनाथ मंदिर

जागेश्वर मंदिर (कत्यूर वंश)

कटारमल सूर्य मंदिर

2. चंदवंश शासन

कत्यूर वंश के अंतिम राजाओं की शक्ति क्षीण होने के कारण छोटे–छोटे राज्य स्वतंत्र हो गए जिस कारण चंदवंश के राजा ने अपनी स्थानीय शक्ति के द्वारा अपने राज्य का विस्तार कर लिया, संपूर्ण कुमायूं में इस समय कोई एक राजा ऐसा ना था जो सबको अपने अधीन कर पाता। इस संक्रांति काल में राज्य की स्थिति विश्रंखलित हो गई कत्यूर राजाओं के द्वारा विकास के जो भी कार्य प्रारंभ किए गए थे वह या तो समाप्त हो गए या उनका स्वरूप ही बदल चुका था। कत्यूर वंश के अंतिम शासकों ने प्रजा पर अत्यधिक अत्याचार भी किए। शनै शनै चंदवंशी राजाओं ने अपने एकछत्र राज्य की नींव डाली चंदवंशी शासन काल के बारे में भी इतिहासकारों के विभिन्न मत हैं कोई इनका प्रारंभ 1261 ई0 से मानता है तो कोई सन् 953 ई0 से श्री बद्रीदत्त पाण्डे के अनुसार चंद वंश का प्रथम राजा सोमचंद सन् 700 ई0 के आसपास गद्दी पर बैठा। घोद्दर चंद (1261) को भी कुछ विद्वान चंद्र वंश का प्रथम शासक स्वीकार करते हैं जो कि उचित नहीं जान पड़ता चंद्रवंशी राजाओं के कुमाऊँ में आने का कारण भी स्पष्ट नहीं है।

विद्वानों के अनुसार कत्युरी शासन की समाप्ति के बाद देशी राजाओं के अत्याचारों से दुखी प्रजा कन्नौज के राजा सोमचंद के पास अपना दुख निवेदन करने गई उन्हें कुमाऊॅ में शांति स्थापना के लिए आमंत्रित किया अन्य इतिहासकारों के अनुसार सोमचंद इलाहाबाद के पास स्थित झूंसी के राजपूत थे। सोमचंद बद्रीनाथ की यात्रा पर आए तो सूर्यवंशी राजा ब्रह्मदेव ने उन्हें अपना मित्र बना लिया सोमचंद ने अपने व्यवहार एवं परिश्रम से छोटा सा राज्य स्थापित कर लिया तथा कालांतर में खस राजाओं को हटाकर अपने राज्य का विस्तार कर लिया कुमाऊॅ के ध्यानीरौ ,चौमेसी, सालम रंगोल पट्टियॉ चंदवंश के अधीन आ गई थीं। राजा महेंद्रचंद (1790 ई0) तक संपूर्ण कुमाऊॅ के चंद राजाओं का पूर्ण अधिकार हो चुका था। पॉच सौ पचास वर्षों की अवधि तक चंदों ने कुमाऊॅ पर एकछत्र राज्य किया इसी समय कन्नौज आदि से कई ब्राह्मण जातियों कुमाऊॅ में बसने के लिए आयीं तथा अपने साथ अपनी सामाजिक कुरीतियां भी लेकर आयीं यह छुआछूत खानपान में भेद वर्ण परंपरा एवं विवाह संबंधी गोत्र जाति का भेद लेकर यहां आए तथा यहां के मूल निवासियों के साथ भी उसी के समान व्यवहार करने लगीं वही परंपरा कुछ परिवर्तनों के साथ आज भी कमाऊॅ में प्रचलित है ।

चंद राजाओं के शासनकाल में कुमाऊॅ में सर्वत्र सुधार तथा उन्नति के कार्य को हुए। चंदों ने जमीन तथा कर निर्धारण का कार्य किया, गांव प्रधान व मुखिया की नियुक्ति करने की परंपरा चंद राजाओं द्वारा प्रारंभ की गई है। चंद्र राजाओं का राज्य चिन्ह गाय था। तत्कालीन सिक्कों मोहरों एवं झंडों पर यह राज्य चिन्ह अंकित किया जाता था।

उत्तर भारत के मुगलों के शासन काल में विशेषतः औरंगजेब के शासन के समय मुसलमान संस्कृति से कुमाऊॅ संस्कृति का प्रचुर मात्रा में आदान–प्रदान हुआ। कुमाऊॅ में मुसलमानों का शासन तो कभी नहीं रहा परंतु जहांगीरनामा और शाहनामा जैसी ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चंद राजाओं से मुगल दरबार का सीधा संबंध था। यद्यपि यह संबंध राजा से राजा तक ही सीमित रहा परंतु आगे चलकर सांस्कृतिक सम्बन्धों में परिलक्षित हुआ तथा यह संबंध भाषा व साहित्य में दृष्टिगोचर होने लगा इसी समय कुमाऊॅ भाषा में अरबी फारसी तुर्की भाषाओं के कई शब्द प्रयुक्त होने लगे।

चम्पावत का किला काली कुमाऊॅ (कत्यूर शासनकाल)

चम्पावत चंद्र राजवंश की राजधानी

बालेश्वर मंदिर चम्पावत

3. गोरखा शासन

गोरखा शासन की नींव 18 वीं सदी के अंतिम दशक में पडी जब आपसी दुर्भावना और राग द्वेष के कारण चंद राजाओं की शक्ति बिखर गई। फलतः गोरखों ने अवसर का लाभ उठाकर हवालबाग के पास एक साधारण मुठभेड़ में सन् 1790 ई0 की चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा के दिन अल्मोड़ा पर अपना अधिकार कर लिया ।

गोरखा शासनकाल में शासन संबंधी अनेक कार्य किए गए सैनिक संधि, जमीन का प्रबंधन सेना का संगठन, कर प्रणाली आदि को सुधारा गया तथा इनमें आवश्यक परिवर्तन भी किए गए। वहीं दूसरी ओर जनता पर अत्याचार भी खूब किए गए गोरखा राजा बहुत कठोर स्वभाव के थे। साधारण सी बात पर किसी को मरवा देना उनके लिए सामान्य कर्म था। चंद राजाओं की तरह यह भी धार्मिक राजा थे गाय, ब्राह्मण का इनके शासन काल में विशेष सम्मान था। दान व यज्ञ जैसे कर्मकांडों पर विश्वास के कारण इनके समय कर्मकांडों को भी बढ़ावा मिला।

न्याय के लिए विचित्र कार्यों को करने में ये संकोच नहीं करते थे। जनता पर नित्य नए कर लगाना सैनिकों को गुलाम बनाना कुली प्रथा, बेगार प्रथा इनके अत्याचार ही थे। श्री ट्रेल ने लिखा है गोरखा राज्य के समय बड़ी विचित्र राजाज्ञाएँ प्रचलित की जाती थी जिन को तोड़ने पर अर्थदंड देना पड़ता था, जैसे गढवाल में एक हुक्म जारी हुआ कि कोई औरत छत पर ना चढ़े।

गोरखे स्वभाव से सैनिक सरीखे होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि इस शासनकाल में कुमाऊँ पर सैनिक शासन रहा गोरखे अपनी न्शंसता तथा अत्याचारी स्वभाव के लिए जाने जाते थे। जब अंग्रेजों ने इस राज्य पर आक्रमण किया तो तब कुमाऊँ ने मुक्ति की सांस ली। 27 अप्रैल 1815 ई0 को अंग्रेजों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर करके गोरखाओं ने कुमाऊँ की सत्ता अंग्रेजों को सौंप दी।

गोरखा शासन काल में मुद्रायें

गोरखा शासन

4. अंग्रेजी शासन

ई. गार्डन ने गोरखों से कुमाऊँ की सत्ता का कार्यभार लिया था। 1891 तक कुमाऊँ कमिश्नरी में कुमाऊँ गढ़वाल और तराई के 3 जिले शामिल थे इसके बाद कुमाऊँ को अल्मोड़ा नैनीताल दो जिलों में बांटा गया।

ट्रेल लैशिगंटन, वैटन, हैनरी रैमजे आदि विभिन्न कमिश्नर ने कुमाऊँ में समय–समय पर विभिन्न सुधार तथा रचनात्मक कार्य किए जमीन का बंदोबस्त, लगान निर्धारण, न्याय व्यवस्था, शिक्षा का प्रसार, परिवहन के साधनों की उपलब्धता के कारण अंग्रेजों के शासनकाल में कुमाऊँ की खूब उन्नति हुई हैनरी रैमजे के विषय में श्री बद्रीदत्त पाण्डे लिखते हैं उनको कुमाऊँ का बच्चा–बच्चा जानता है। बे यहां के लोगों के हिल मिल गए थे घर–घर की बातें जानते थे। पहाड़ी बोली भी बोलते थे। किसानों के घर की मंडुवे की रोटी भी खा लेते थे अंग्रेज कुशल एवं दूरदर्शी शासक थे। यही कारण है कि उन्होंने जहां समाज की उन्नति की शासन अवस्था में पर्याप्त सुधार किए वहीं अपने शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए कठोरतम न्याय व्यवस्था भी की।

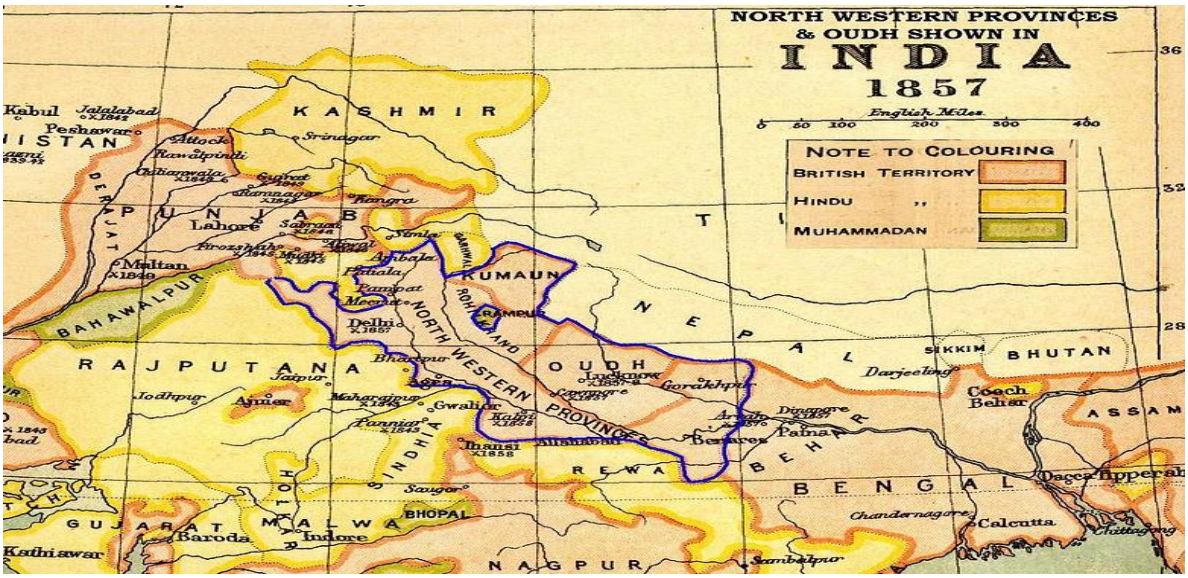

ब्रिटिश काल में उत्तराखण्ड

उपयोगिता –

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र विकासखण्ड जसपुर जनपद ऊधमसिंह नगर के मैदानी भूभाग में स्थित है यह शोध पत्र इस क्षेत्र के भौगोलिक विकास , मृदा के निर्माण , क्षेत्र के बिभिन्न भू भागों में अवस्थित भूमि के प्रकार के अध्ययन में उपयोगी होगा । यह शोध पत्र

अध्ययन क्षेत्र में मृदा की संरचना , मृदा में पाये जाने वाले मृदीय कणों तथा मृदा के प्रकार के साथ साथ क्षेत्र में कृषि फसलों के चयन के लिए भी उपयोगी शिद्ध होगा । उत्तराखण्ड भौगोलिक उवं सोस्कुतिक बिबिधता का क्षेत्र है। इसका अधितर भू–भाग पर्ववतीय है यहॉ का इतिहास एव संस्कृति प्राचीन है जो समय समय पर परिवर्तित होती शासन व्यवस्थओं द्वारा प्रभावित हुई है। यह शोध पत्र अध्ययन क्षेत्र में बिभिन्न शासकों के शासनकाल में होने वाले भौतिक एवं सांस्कुतिक विकास के अध्ययन में भी उपयागी सिद्ध होगा ।

संदर्भ

1. स्पेट, ओ.एच.के. (1967): इंडिया एंड पाकिस्तान पृ. 500
2. इंडियन मेट्रोलॉजिकल डिपार्टमेंट (1954): हॉट ड्राई डैजर्ट द राइजिंग विण्डस लू , वॉल्यूम –5 ।
3. नेविल,आर.एच. (1922): एक गजट ईयर ऑफ डिस्ट्रिक्ट मुरादाबाद, पृष्ठ– 225।
4. बक जे.एल. (1937): लैंड यूटिलाइजेशन इन चाइना, पृ0– 358
5- महाभारत वनपर्व अध्याय 140
6- महाभारत वनपर्व अध्याय 52
7. नेगी एसएस (1995) उत्तराखण्डः भूमि और लोग।नई दिल्ली एमडी पब
8. हिमालय की नदियां , झीलें और गलेशियर । नई दल्ली इंडस पब.